Nationa

2015

ISSN – 2278-0319

International Registered & Recognized
Research Journal in Higher Education For all Subjects.

22

RESURRECTION

Research Journal For Resurrection in Intellectual Disciplines

Vol – 13, Issue- I,
Year –4 (Quarterly)
(May., 2015 to July.,2015)
Est. On - May 2012

Editorial Office

'Hira'
1320, Laxmi Nagar.
Ganeshpur, Behind Sound Cast Factory, Hindalga, Belgaum. Dist- Belgaum-591108. Karnataka (India)

Contact :

09481402640
09420131186

Email-
khanderavaji@rediffmail.com
shakyadeeta26@gmail.com
rrr.journal@gmail.com

WEBSITE:
www.rrrjournals.com

Price Rs. 300/-

CHIEF EDITOR

Dr. Khanderavaji S. Kale
'HIRA' 1320,Laxmi Nagar Ganeshpur.
Hindalga,Belgaum.(KARNATAKA)

EDITOR

Dr. Baumaun Prceda
Prof. of Education,
Board of Education,Bangkok.Thailand.

Dr. Rupesh Devan
Prof. of Physics,
National Dong Hwa Uni.,Taiwan.

Dr. Dattatray More
Principal
Shri. Shahaji Chh. College,Kolhpur.

Dr. R. N. Salve
Prof. of Sociology,
Shivaji University, Kolhapur,(M.S.)

Dr. H. M. Shailaja
Prof. of School Education,
Rani Chennamma University, Belgaum.

Dr. Vilas Kharat
Prof. of Mathematics,
Pune University, Pune.(M.S.)

CO - EDITOR

Dr. M. D. Pujari
Head, Dept. of Accountancy,
Dr. Ghali College, Gadhinglaj

Dr. A. R. Kamble
Head, Dept. of Sociology,
New College, Kolhapur

Bhadvankar P. L.
Head, Dept. of Psycology,
R. B. Madkholkar College,Chandgad

Dr. P. B. Kamble
Dept. of English,
Rajshri Shahu College, Rukhadi

R. D. Kamble
Dept. of Marathi,
College of Arts,Kowad.

V. M. Kadam
Head,Dept. of Sociology,
Vivekanand College, Kolhapur

A. A. Mane
Head, Dept. of Botany
R. B. Madkholkar College,Chandgad

V. K. Dalvi
Head, Dept. of Sociology,
College of Arts,Kowad,

V. V. Kshirsagar
Dept. of Economics,
Arts & Commerce College, Nesari

S. N. Patil
Head, Dept. of Hindi,
R. B. Madkholkar College,Chandgad

CONTENTS

1. Swati N. Bhosale
A Review of literature on Consumer buying behavior towards mobile phone

4. Dr. N. K. Shinde
Half Girlfriend: Dangling between Relationship and Friendship

10. Dr. Paul D Madhale & Dr. D M Kumthekar
Role of Human Resource Management in Corporate Social Responsibility

16. Dr. J. B. Patil
On Defining Happy Man : Role of Relative Clause in the Poem 'Ode on Solitude' written by Alexander Pope.

19. Priyanka P. Patil & Dr. B. T. Bandgar
A review of Literature on corporate social responsibility practices in India

22. Priyanka S. Jagtap & Dr. C. S. Kale
A Review of Literature on consumer buying behaviour.

24. Shreyas A. Patil & Dr. C. S. Kale
A review of Lterature on Inventory Management of OTC drugs in india.

27. Tejashri A. Chavan
A review of Liturature on OccupationalHealth and Safety Management

30. Abhijeet R Edake & DR. C. S. Kale
A review of Literature on Quality Management System

33. Pujari Manorama B. & Dr. M. M. Ali
A review of Literature on welfare facilities and its impact on employee satisfaction

36. Prof. M. M. Bagban & Dr. R. B. Teli
Growth and Development in Indian and World Sugar Industry

43. Prof. M. M. Bagban & Dr. R. B. Teli
Strategies for sugarcane improvement in India

50. Prof. Shabana A. Memon.
Competencies For Nurturing A Global Mindset For International Entrepreneurship

55. Dr. J. B. Patil
The Role of 'Deictic Shift Theory' in the interpretation of the Text.

58. डॉ. अनिल कठारे,
स्वराज्य उभारणीत महार लोकांचा सहभाग

61. प्रा. डॉ. सूर्यवंशी रंजना कृष्णा
मुद्रित माध्यमों के विज्ञापनों में जनसंचार माध्यम का मसौदा लेखन

63. प्रा. डॉ. एस. के. खोत
हिंदी दलित नाटक

67. डॉ एस.एम. गावडे
महिला सब लीकरण : एक संकल्पना

71. प्रा.कुचेकर एच.एस
पाणी व्यवस्थापन - संकल्पना आणि वास्तव

77. प्रा.पाटील संजय नारायण
प्रभावी ग्रंथालय व्यवस्थापन में संदर्भ सेवा की वर्तमान उपयोगिता

81. तानाजी मारुती नौकुडकर
सुदर्शन भाटिया के लघुकथा साहित्य में चित्रित नारी"

Page No-63 to 66
Research Paper-***Hindi***
Research Journal for
Resurrection in intellectual Discipline
ISSN 2278-0319,Vol-13, Issue-1, May., to July.,-2015 (Quarterly)

हिंदी दलित नाटक

प्रा. डॉ. एस. के. खोत
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
चंद्राबाई – शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी, जि. कोल्हापुर

नाटक एक अत्यंत प्राचीन कला है । यह दृश्य और श्राव्य विधा है। यह सत्य है उसका आस्वाद देखने और सुनने में है । आस्वाद लेते समय नियम समय पर रंगमंच तक जाना पडता है । "नाटक का दर्शक नियत समय के लिए ही नाटक का आनन्द ले सकता है । बीच में छोडकर और जब इच्छा हो, तब नाटक का आनन्द नहीं लिया जा सकता है ।"[1] संवाद या कथोपकथन नाटक की आत्मा है । नाटक को पॉचवा वेद कहा जाता है । सामाजिक बदलाव और मनोंरजन का प्रभावी तथा महत्त्वपूर्ण माध्यम नाटक है ।

वर्तमान युग में औद्योगिकरण, नागरीकरण, भूमंडलीकरण, नारी और दलित विमर्श की अधिकांश मात्रा में चर्चा होने लगी है । आंबेडकरी तत्त्वज्ञान को केंद्र में रखकर दलित रचनाकारों ने अनेक नाटक लिखे हुए दिखाई देते है । दुःख इस बात है कि भारत वर्ष को आजादी मिलने के उपरान्त भी वर्णधिष्ठित समाज स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है । दलित रचनाकारों ने दलितों की सही स्थिति नाटकों में चित्रित की है । साथ ही साथ स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व तथा न्याय की मॉग करने का दलित रचनाकोरों ने स्त्युत्य प्रयास किया है। गौरव की बात यह है की दलित नाटककार दलितों की त्रासद स्थिति दिखाने में निश्चित ही यशस्वी हुए दिखाई देते है । हमें यह मानना पडेगा कि दलित पृष्ठभूमि पर दलित नाटककार के साथ गैर दलित नाटककारों ने दलितों की वास्तविकता हिंदी के पाठकों एवं दर्शकों की परिचित कराने में सराहनीय योगदान दिया है । "अगर नाटक की थीम (कथानक) दलित– अस्मिता और दलित चिंतन से जुडे मुद्यों, जातिभेद, छुआछुत, शोषण, अत्याचार, दलन, उत्पीडन, आरक्षण, वास और पुनर्वास पर केन्द्रित होगी तभी वह नाटक दलित नाटक कहलाने का अधिकारी होगा।"[2]

गलत मान्यता के तहत् पुरातन काल से दलित उपेक्षित रहा है । अफसोस की बात है कि किसी भी प्रकार की सुख सुविधा दलित समाज को नहीं मिली । सामाजिक विषमता दूर करने हेतु अनेक समाज सुधारकों, संतो और रचनाकारों ने स्तुत्य प्रयास किया । परिणाम स्वरूप आज सही तथा उचित बुलाव देखने को मिलता है । डॉ. भरत सगरेजी ने ठिक लिखा है, "स्वातंत्र्यपूर्व काल का अपमानित, उपेक्षित, खंडित, दास, कमजोर परंपरावादी दलित धीरे धीरे जागष्त होने लगा । औद्योगिकरण, नागरीकरण,

शिक्षाप्रसार, पाश्चात्य सभ्यता का संपर्क, राजनीति में प्रवेश आरक्षण आदि के कारण अब दलित आगे बढ रहा है । "[3]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समानता की बात कितनी भी क्यों न हो किंतु असल में भेदभाव का ज्वलंत उदाहरण स्पष्ट रूप में देखने को मिलते है । बसवेश्वर, चार्वाक, कबीर, रैदास, महात्मा फुले, छ. शाहू महाराज और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की प्रेरणा लेकर अनेक रचनाकार अपनी कलम चलवाने प्रयास कर रहे है । जिनमें डॉ. गोविंद चातक का नाम बडे सम्मान के साथ लिया जाता है ।

डॉ. गोविंद चातक जी ने अपने 'काला मुँह' नाटक में दलित वर्ग की बहुमुखी शोषण की व्यथा कथा चित्रित की है । गोबर, केसर और केशी इन तीनों पात्रों ने भोगा हुआ यथार्थ वर्णित किया है । प्रस्तुत नाटक में रेंजर, ठेकेदार, पटवारी, साहूकार, ठाकूर और ब्राह्मण षडयंत्र के महत्त्वपूर्ण भागीदार है । वे ही सबसे बडे शोषक है । ऐसे ही लोग आम औरतों को कोठे तक सहजता से पहुँचाते है । लोगों की बेगार करना तथा उनकी जमीन अपने नाम करता वे अपना धर्म मानते है । केसर और केशी एक दूसरे से चाहते हुए भी केशी के पिताजी की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसका विवाह वे गोबर के साथ लगाते है । गोबर, सिर्फ अनपढ ही नहीं वह शराबी भी है । ठेकेदार के कर्ज के बोझ में रहने में ही गोबर सुख समझता है । वासना की नजर से रेंजर कमरा साफ करनेवाली केशी को देखता है और अत्याचार भी करता है । इसका इल्जाम केसर पर लगाकर केसर को बंद हवालात में बंद किया जाता है । केशी को धमकानेवाले सीरीधर पांडे, बैजू ठेकेदार औ रेंजर को गोबर, केशी और केसर विरोध करते है । इस नाटक में इन लोगों का मुँह काला देखने को मिलता है ।

एक सफल नाटककार तथा जिनका नाटयसंसार विस्तष्त है । ऐसे हिंदी के सम्माननीय विद्वान डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का 'अंधा कुँआ' यह प्रथम नाटक है । वे जातिप्रथा को समाज के लिए कलंक मानते है साथ ही साथ इन्सानियत को लज्जित करनेवाले भी मानते है । सदियों से भारत वर्ष में रूढी तथा परंपराओं का राज्य रहा है । किंतु यह भी हमें मानना पडेगा की वर्तमान युग में इस क्षेत्र में बदलाव हो रहा है । डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने 'रातरानी' नाटक में वर्णव्यवस्था पर व्यंग्य कसा है । डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जातिप्रथा को मिटाकर समानता की भावना पैदा करना चाहते है । आज भी गलत धारणा है कि निम्न जाति का व्यक्ति निम्न कोटी का ही काम कर सकता है । 'रातरानी' नाटक में घर का छोटा मलिक जयदेव अपने रैंदास जाति के माली को चौक में खाना खाने से रोकता है । किंतु जयदेव की पत्नी कुंतल इन बातों को विरोध करती है। कुंतल संवेदनशील तथा धार्मिक होने के कारण चौक में ही माली को खाना खाने की जिद करती है । माली जयदेव के बर्ताव से दुःख के साथ कहता है, "मनुष्य ईश्वर की लिखी हुई पाती है, हमें पाती को मजमून देखना चाहिए उसकी जात पात, रूप रंग देखने से क्या।"[4] यह स्पष्ट है कि आज के युग में भी कोई भी दावे के साथ कह नहीं सकता कि जाति प्रथा का पूर्णरूपेण समाप्त हो चुकी है ।

डॉ. शंकर शेष का 'बाढ का पानी' का नाटक यर्थोन्मुखी आदर्शवादी है । इस रचना का मुख्य मक्सद भेदभाव मिटाना और लोगों में बदलाव करना है। अधिकांश रूप में परंपरावादी लोग यह मान बैठे है कि नर्मदा नदी को बाढ आने का कारण हरिजनों को मंदिर में प्रवेश करना है । मौत के डर से धर्म के ठेकेदार अपने मन में दलितों के प्रति सकारात्मक सोच निर्माण करते है। गॉव के सभी लोग उँच–नीच के भावना को तिलांजली देते है । चमार छीतू का मकान स्वर्ग से महान बन जाता है । मानवतावादी दृष्टि स्थापित करने में डॉ. शंकर शेष सफल हुए है । डॉ. सुशीला टाकभौरे कमजोर तथा शोषित

मानसिकता को लताडती है । सामाजिक समानता की स्थापना करना सुशीला टाकभौरे जी उद्देश है । वह 'नंगासत्य' नाटयरचना में सडी गली परंपरा और आर्थिक कमजोरी से मुक्ती चाहती है । इसके बारे में कमल कहता है, "समाज को बदल डालो, समाज व्यवस्था को बदल डालो, रूढीयों को तोड दोकृ बेडियों को तोड दो ।"[5] शिक्षा के परिणामस्वरूप दलितों का स्वाभिमान सचेत हुआ है। अपने विचार, ज्ञान तथा कौशल के आधार पर दलित समाज अपना स्थान बलवत्तर बना रहे है । वर्तमान युग में दलित समाज समय के साथ बदलना चाहता है, वह आगे बढना चाहता है । सामाजिक कार्यकर्ता तथा दलित रचनाकार सुशीला टाकभौरेजी शोषण किसी भी तरह का हो उसके विरूध्द आवाज बुलंद करने की माँग करती है । सही अर्थों में समाज में बदलाव होने के लिए लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक ही नही अनिवार्य हैं ।

डॉ. कुसुमकुमारी जी ने अपने रचनाओं में दलित पात्रों को विद्रोही रूप में अंकित कर स्वाभिमान का सही परिचय दिया है । 'सुनो शेफाली' इस नाटयकृति में डॉ. कुसूमकुमार जी ने शेफाली एक दलित उपेक्षित तथा पीडित रूप में चित्रित की है । शेफाली को अपने जीवन में सभी समस्याओं का सामना करना पडता है। शेफाली समस्या से ही प्रगल्भ बनती है । कठोर परिश्रम करके उच्च शिक्षा प्राप्त कर वह अध्यापिका बनती है । विशेष बात है कि वह स्वार्थी तथा लोभी बकुल के साथ शादी करती नहीं है। शिक्षा साहस और आत्मविश्वास से ही स्वाभिमानी दलित बनेगा यही धारणा डॉ. कुसुमकुमार की है ।

ख्यातिप्राप्त आधुनिक नाटककार स्वदेश दीपक लिखित 'कोर्ट मार्शल' नाटक भेदभाव के रूप को उजागर करता है । इस भेदभाव का परिणाम विभिन्न क्षेत्रों पर पडता है । स्पष्ट है कि कानून ने सबको समान दर्जा दिया है । किंतु दुर्भाग्य से दलित शोषित पीडित को बराबर का अधिकार देने के लिए उच्च जाति के लोग तैयार नहीं है ।

शतकों से निम्न जाति पर अन्याय अत्याचार हो रहा है । अमानवीय क्रूर व्यवहार करने में उच्च जाति के लोग गर्व महसूस करते है । प्रस्तुत नाटक का नामक रामचंदर आदर्श फौजी है । उनके रग रग में विनम्रता है। लगन से काम करना फौजी अपना फर्ज मानता है । वह एक वफादार जवान के रूप में मशहूर है । अफसर कैप्टन कपूर लतखोर, शराबी और लैंगिक विकृतीयुक्त है । कैप्टर कपूर और वर्मा रामचंदर को बार बार चूहडा और भंगी कहकर संबोधित करते है । वे मोटार सायकल रोककर रामचंदर की गाली देते है । उस पर जुल्म करनेवाले दो अफसरों पर रामचंदर जानलेवा हमला करता है । एक की घटना स्थल पर ही हत्या करने के अपराध में कोर्ट मार्शल होता है । यह सत्य है कि निम्न जाति का व्यक्ति आदर्श बर्ताव करता है ते उच्च जाति के अफसरों को उचित नहीं लगता है।

प्रताप सहगल जी ने 'लडाई' नाटयकृति में सामाजिक विषमता का सही चित्रण किया है । उच्च वर्णीय लोगों के द्वारा दलितों पर होनेवाले अत्याचार का बारिकियों से वर्णन सहगल जी ने बडे खूबी के साथ किया है। अलग अलग धर्म तथा जातियों के लोगों का अंतर्जातीय विवाह होता है तब सामाजिक विषमता को ठेस लगती है । इस नाटक की उच्च जाति की नायिका अपने निम्न जाति के प्रेमियों के साथ विवाह करना चाहती है । घरवालों का इस विवाह को पूरा विरोध होने के बाद भी दोनों शादी करते है और सामजिक समता का आदर्श समाज के सम्मुख रखते है ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं । साहित्य की विविध विधाओं को उन्होंने समध्द किया है । स्वतंत्रता के पश्चात जिन साहित्यकारों का व्यवस्था से मोहभंग हुआ उनमें वे अग्रणी है। इस नाटक में युवक के माध्यम से

जातिव्यवस्था पर कडा पहार सुचारू रूप से किया है । प्रस्तुत नाटक में गांधीजी के सिध्दान्तों का दुरूपयोग चित्रित किया है। तीन डाकू और एक सिपाही के द्वारा गॉव की गरीब औरत विपत्ती की बकरी हडप लेने का प्रसंग सोचने के लिए बाध्य करनेवाला है । एक युवक के द्वारा भ्रष्टाचार तथा विसंगती को तोडने के साथ ही साथ दलित शोषित पीडित वर्ग पर होनेवाले अन्याय के बारे में आवाज उठाने की बात सर्वेश्वर जीने चित्रित कर दी है । स्पष्ट है कि युवक में आंबेडकर वादी चेतना जगायी है ।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उपर्युक्त नाटककारों ने दलितों की अनेक समस्याओं तथा दशाओं का सही चित्रण किया है । अनेक पात्रों को क्रांतिकारी रूप में अंकित कर समाधान भी बताने का भरसक प्रयास किया है । उँच–नीच भेद भाव को मिटाकर सामाजिक समता स्थापित करना दलित नाटककारों का उद्देश है । स्पष्ट है कि हिंदी नाटककारों का दलितों की जीवन में एक नयी प्रेरणा देने का महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

संदर्भ संकेत

1. भगीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र, पृ. 80
2. डॉ. भरत सगरे, हिंदी और मराठी साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना, पृ. 237
3. डॉ. भरत सगरे, दलित साहित्य शोध एवं दिशा, पृ. 52
4. डॉ. लाल लक्ष्मी नारायण, रातरानी, पृ. 55
5. सुशीला टाकभौरे, नंगा सत्य, पृ. 50